PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

फरवरी 2008 ISSUE 0208 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

अपना गुस्सा थूक दें; क्षमा, प्रेम और दया करें!

✶ प्रभु की क्षमाशीलता ✶

एक बार प्रभु येशु के शिष्यों में प्रमुख पेत्रुस ने उनके पास आकर यह पूछा, "प्रभु! यदि मेरा भाई मेरे विरूद्ध अपराध करता जाये, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? सात बार करूँ?" तब येशु ने उत्तर दिया, *"मैं तुम से नहीं कहता– **सात बार तक, बल्कि सत्तर गुणा सात बार तक।"(सन्त मत्ती 18:21-22)***

आप शायद सोच रहे होंगे कि यह तो क्षमा करने की हद ही हो गई। दो या तीन बार से अधिक क्षमा करने पर तो अपराधी को आपकी छवि कमज़ोर दिखने लगेगी और आज के ज़माने में यह बेवकूफी ही समझी जायेगी। पर यह अक्षम्यता, घमण्ड और निर्दयता ही तो है, जिसके कारण आज परिवारों में, राष्ट्रों में, सारे संसार में अशान्ति, मतभेद, बुराई और आतंक फैला हुआ है।

पेत्रुस भी शायद आप की तरह यह सोच रहा था कि प्रभु से यह कहकर कि मैं अपराधी को यदि सात बार क्षमा कर दूँगा, तो प्रभु मुझे शाबाशी देंगे। पर ऐसा नहीं हुआ। प्रभु ने सदा क्षमाशील व सहनशील बनने की शिक्षा दी। प्रभु ने सत्तर गुणा सात बार क्षमा करने की बात कही जिसका अर्थ गणित के अनुसार चार सौ नब्बे बार नहीं था, अपितु अनगिनत बार था। क्योंकि ऐसा कोई नहीं जिसने पाप नहीं किया और इस प्रकार ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो ईश्वर की द ष्टि में पूर्ण धार्मिक या पवित्र जीवन बिताता हो, जो निष्पाप हो और दूसरों पर दोष लगा सकता हो। इस तरह न तो कोई किसी का सच्चा न्याय कर सकता है और न ही किसी पर दोष लगा सकता है क्योंकि वह दूसरों पर दोष लगाकर न्याय के दिन के लिए ईश्वर का कोप संचित कर रहा है। केवल ईश्वर ही है जो सच्चा न्यायकर्ता है और जिसे सारी मानवजाति का न्याय करने का अधिकार है।

एक बार फरीसी व्यभिचार में पकड़ी गयी पापिनी स्त्री को प्रभु येशु की परीक्षा लेने के उनके सामने लाये, जिससे प्रभु उसे संहिता के अनुसार पत्थरों से मार डालने का आदेश दें और उसकी हत्या का कारण बनें। पर उन्होंने ऐसा आदेश नहीं दिया, बल्कि यह कहा कि जो व्यक्ति यह समझता है कि वह निष्पाप है, वह उसे सबसे पहले पत्थर मारे। नतीजा यह हुआ कि सभी अभियोगियों ने मुँह की खाई। वे बिना कुछ किये वापस लौट गये। उस स्त्री को प्रभु येशु ने भी, जो मनुष्य बनकर भी निष्पाप थे, क्षमा कर दिया यह कहकर, ***"जाओ और अब से फिर पाप नहीं करना।" (सन्त योहन 8:1-11)*** प्रभु येशु के चरणों में गिरी पापिनी स्त्री को वह दण्ड दे सकते थे, उसे पत्थरों से मार सकते थे, क्योंकि न्याय करने का पूरा अधिकार उन्हें पिता परमेश्वर ने दिया है **(सन्त योहन 5:27)**। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि प्रभु पापियों का उद्धार करने के लिए व उनके लिए अपने प्राण देने के लिए ही इस धरती पर आये थे, न कि इस धरती से उनका नामोनिशान मिटाने के लिए। वह पाप से बैर करते हैं, पर पापियों से नहीं। वे सही मार्ग से भटकी हुई भेड़ों के समान हैं जिन्हें उनको अपने पिता के घर प्रेम के साथ कन्धों पर उठाकर वापस लाना है। उनकी शरण में आये किसी को वह नष्ट न होने देंगे, क्योंकि पिता की इच्छा के बगैर कोई उनके पास नहीं आ सकता और पिता यह चाहते हैं कि जो कोई उनके पुत्र के पास आये, वह पापों से मुक्ति प्राप्त कर स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करे**(सन्त योहन 6:44)**। उनके लिए हर एक आत्मा अतिप्रिय व बहुमूल्य है।

आप भी जब उनकी शरण में पश्चाताप भरे हृदय से जाओगे, तो वह आपको क्षमा कर यही कहेंगे, ***"बेटा/बेटी! जाओ और अब से फिर पाप नहीं करना।"*** और यदि उन्होंने आपको क्षमा कर दिया है, तो आप उनकी कृपा के ऋणी हैं और आपका कर्तव्य यह बनता है कि भविष्य में आप फिर पाप न करें जिसके लिए फिर प्रभु की कृपा की ही ज़रूरत है। साथ ही आपका यह फर्ज़ भी बनता है कि आप भी सबको क्षमा कर दें– एक बार नहीं, सात बार नहीं, पर हर बार। क्योंकि प्रभु ने भी आपको क्षमा किया है, आप पर दया की है। शेष भाग प ष्ठ 2 पर

हे पापियों की शरण, दयासागर माँ! हमें सच्चे पश्चाताप की कृपा दिला!

11 फरवरी को लूर्द की माता का पर्व मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन से सन् 1858 से माँ के दैविक दर्शन सन्त बर्नाडेट को मासाबिएल, लूर्द फ्रांस में होने लगे। इन्हीं दर्शनों में माँ ने अपने निष्कलंक गर्भागमन के सत्य को प्रकट किया। माँ ने **'पापियों के मन-परिवर्तन व बदलाव'** के लिए प्रार्थना पर और **"पश्चाताप तथा पाप-स्वीकार"** पर भी दर्शन द्वारा जोर दिया था। आओ हम उस माँ से विनती करें–

'हे दयासागर माँ, पापियों की शरण, दुःखियों की दिलासा तथा ख्रीस्तानों की सहायता, तुम मेरी हर आवश्यकता, दुःख–वेदना और चुनौती जानती हो। मुझ पर दयाद ष्टि कर कि मैं अपने दैनिक क्रूस को खुशी से उठाकर तेरे पुत्र के बताये मार्ग पर चल सकूँ, सच्चे पश्चाताप का वरदान प्राप्त करूँ और सभी पापों से मुक्ति प्राप्त कर अनन्त जीवन में प्रवेश पा सकूँ, उसी मुक्तिदाता प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।'

"जब तुम दान देते हो, तो तुम्हारा बायाँ हाथ यह न जानने पाये कि तुम्हारा दायाँ हाथ क्या कर रहा है। तुम्हारा दान गुप्त रहे और तुम्हारा पिता, जो सब कुछ देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।"(सन्त मत्ती 6:3-4)

पृष्ठ 1 का शेष भाग

यदि वह सबको उनके अपराधों के अनुसार दण्ड देता, तो इस धरती पर कोई जीवित ही नहीं रहता। यह तो उनकी हृदय की उदारता, कृपा, दया, प्रेम, सहनशीलता व क्षमा ही है, जिससे हम सभी आज जीवित हैं।

प्रभु की अपार दया

"प्रभु एक करुणामय तथा कृपालु ईश्वर है। वह देर से क्रोध करता और अनुकम्पा तथा सत्यप्रतिज्ञा का धनी है। वह एक हज़ार पीढ़ियों तक अपनी कृपा बनाये रखता और बुराई, अपराध और पाप क्षमा करता है।" (निर्गमन 34:6-7)

प्रभु हमसे भी विशाल व दयालु हृदय रखने की अपेक्षा करते हैं। हमारा हृदय पत्थर समान असंवेदनशील न हो, बल्कि रक्त-मांस का विनीत और सहानुभूतिपूर्ण हृदय हो। प्रभु हमसे वादा करते हैं कि **जिसने दया दिखाई है, उसपर दया की जायेगी क्योंकि दया न्याय पर विजयी है।** उनकी इन प्रतिज्ञाओं पर हम विश्वास करें, **"अपने स्वर्गिक पिता-जैसे दयालु बनो। दोष न लगाओ और तुम पर भी दोष नहीं लगाया जायेगा। किसी के विरुद्ध निर्णय न दो और तुम्हारे विरुद्ध भी निर्णय नहीं दिया जायेगा। क्षमा करो और तुम्हें भी क्षमा मिल जायेगी। दो और तुम्हें भी दिया जायेगा। दबा-दबा कर, हिला-हिला कर भरी हुई, ऊपर उठी हुई, पूरी-की-पूरी नाप तुम्हारी गोद में डाल दी जायेगी; क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा।(सन्त लूकस 6:36-38)**

प्रभु येशु के द्वारा सिखाई **'हे पिता हमारे'** नामक आदर्श प्रार्थना **(सन्त मत्ती 6:9-13)** में भी यह निवेदन एक अनिवार्य कर्तव्य से जुड़ी है– **"हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हमने भी अपने अपराधियों को क्षमा किया है"।** अर्थात् यदि हम चाहते हैं कि हमारे अपराध और पाप प्रभु क्षमा करें, तो पहले हमें सब को क्षमा करना है और सबके साथ मेल-मिलाप या समझौता कर लेना है। **"जब तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहे हो और तुम्हें वहाँ याद आये कि मेरे भाई को मुझसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ कर पहले अपने भाई से मेल करने जाओ और तब आ कर अपनी भेंट चढ़ाओ।"** नाराज़गी, बैर और अक्षम्यता की दीवार जब तक हम न तोड़ेंगे, तब तक प्रभु हमारी प्रार्थना व भेंट स्वीकार नहीं करेंगे। अपने इस कर्तव्य को पूरा करना हम न भूलें या उसे करने से हम न चूकें। नहीं तो हम प्रभु की कृपा व आशीष से वंचित रह जायेंगे।

प्रभु का असीम प्रेम

सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर **प्रेम** है **(1 योहन 4:7-8)** और प्रेम उनसे ही उत्पन्न होता है। इसलिए जहाँ शान्ति और प्रेम है, वहीं ईश्वर है और जहाँ ईश्वर का निवास है वहीं तो स्वर्ग है। **पिता परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसने उसके लिए अपने एकलौते पुत्र को अर्पित कर दिया, जिससे जो उसमें विश्वास करता है, उसका सर्वनाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करे।** और प्रभु येशु ने हमें क्रूस पर अपने जीवन को न्यौछावर कर, अपने अन्तिम बूँद बहुमूल्य रक्त को बहाकर पिता के व अपने सच्चे प्यार का सर्वोत्तम प्रमाण दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को अपना मित्र कहा और यह समझाया, **"इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण अर्पित कर दे।"** उन्होंने हम पापियों के पापों के दण्ड का भुगतान अपने क्रूस बलिदान द्वारा एक बार में ही चुका दिया। मसीह के रक्त द्वारा हम पापियों का पवित्रीकरण हुआ, हम ईश-शत्रुओं, ईश-विद्रोहियों व निस्सहाय **वह हमें आशीर्वाद** अधर्मियों का ईश्वर से मेल हो गया और हम धार्मिक माने गये। **(सन्त योहन 3:16; 15:13-14, इब्रानियों 10:10, रोमियों 5:6-10)** यह है ईश्वर का हमारे प्रति असीम व अगाध प्रेम। वह हमें इसलिए यही प्रेम की आज्ञा दे गये हैं– **"तुम एक दूसरे को प्यार करो। जिस प्रकार मैंने तुम लोगो को प्यार किया, उसी प्रकार तुम भी दूसरे को प्यार करो।"(सन्त योहन 13:34)**

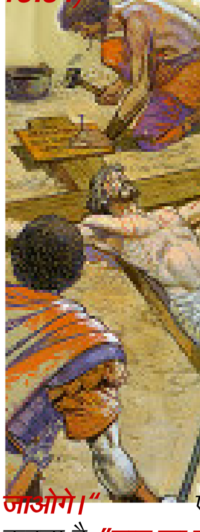

यही नहीं, उनका असीम प्रेम हमें सभी शत्रुओं से भी प्रेम करने की आज्ञा देता है। यह सुनने में कठोर और अनुसरण करने में कठिन अवश्य लगेगा, पर यही प्रभु हमसे चाहते हैं– **"अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। इस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे।"** ऐसा प्रेम है उनका जो कहता है, **"दुष्ट का सामना नहीं करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर दो। जो मुक़दमा लड़ कर तुम्हारा कुरता लेना चाहता है, उसे अपनी चादर भी ले लेने दो।"(पढ़ें सन्त मत्ती 5:23-26; 5:38-42, 5:43-48)**

प्रभु ने शत्रुओं से प्रेम रखने की केवल आज्ञा ही नहीं दी, पर स्वंय अपने जीवन में कर भी दिखाया। उन्होंने क्रूस पर टंगे हुए व अत्यन्त पीड़ा सहते हुए भी अपने पिता से अपने क्रूस पर चढ़ाने वालों के लिए यह कहकर क्षमा माँगी, **"पिता ! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।"(सन्त लूकस 23:34)**

सन्त पौलुस इस प्रेम से प्रेरित होकर अपने पत्र में यह आदेश देते हैं, **"यदि आपका शत्रु भूखा है तो उसे खिलायें और यदि व प्यासा है, तो उसे पिलायें; क्योंकि ऐसा करने से आप उसके सिर पर जलते अंगारों का ढेर लगायेंगे। आप लोग बुराई से हार न मानें, बल्कि भलाई द्वारा बुराई पर विजय प्राप्त करें।"(रोमियों 12:20-21)**

प्रभु येशु के खून व पसीने से लथपथ मुखड़े को, कोडों की मार खाये उस शिथिल व घावों से भरे शरीर को, कीलों से ठुके और छेदित उन पवित्र हाथों और पैरों को यदि हम ध्यान में लगायें, उनकी इस अवस्था, जो हमारे पापों के कारण हुई, की हम कल्पना करें, तो संभवतः ही हमें उनके प्रेम की अनुभूति द्वारा दूसरों को क्षमा करने की क्षमता, प्रभु की सभी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता, अपने दैनिक क्रूस को खुशी से उठा कर उनके पीछे चलने की शक्ति, कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य व विश्वास रखने की कृपा मिल जायेगी।

यदि हम पिता परमेश्वर की सन्तान हैं, तो इस चालीसा काल से, जो इस वर्ष फरवरी 6 से शुरू हुआ, हम अपना पापमय जीवन त्यागें। हम प्रभु की **क्षमाशीलता, प्रेम और दया** पर मनन कर उनका अनुकरण करें। क्षमा, प्रेम और दया सब साथ–साथ चलते हैं। हम धर्माचरण करें **(1 योहन 3:9-10)**, एक दूसरे को अपने समान प्रेम करें**(1 योहन 4:8)**, शत्रुओं से भी प्रेम बनाये रखें और अपने अत्याचारियों के लिए प्रार्थना करें **(मत्ती 5:44-45)**, दूसरों का मेल करायें **(मत्ती 5:9)**, दूसरों पर गुस्सा न करते हुए उन्हें क्षमा करें, उनके प्रति दयालु तथा सहृदय बनें **(एफेसियों 4:32)**, विनम्र हृदय से अपने किये हुए पापों के लिए क्षमा माँगें और निरन्तर प्रभु से सभी वरदानों के लिए प्रार्थना व उपवास करें। तभी हम स्वर्गिक पिता के समान पूर्ण बन सकेंगे **(सन्त मत्ती 5:48)**। उनकी परिपूर्णता तक पहुँचना ही हमारा लक्ष्य है और वही हमें अपनी कृपा द्वारा परिपूर्ण, सुस्थिर, समर्थ तथा सुदृढ़ बनायेगा। **(1 पेत्रुस 5:10)** यही एक **सच्चे ख्रीस्तीय** होने की हमारी पहचान होगी।

मिस्सा बलिदान का समयः

मकान नं०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में
हर इतवार - शाम 6:30 बजे
प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। यहाँ पर 24 घण्टे आराधना होती है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

"जब तुम प्रार्थना करते हो, तो अपने कमरे में जाकर द्वार बन्द कर लो और एकान्त में अपने पिता से प्रार्थना करो। तुम्हारा पिता, जो एकान्त को भी देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।"(सन्त मत्ती 6:6)

जीवित परमेश्वर के अद्‌भुत साक्ष्य- जीवन-धाम से

प्रभु येशु ने इन बच्चों के दिलों को अपने पवित्र वचन द्वारा स्वस्थ कर दिया!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, विमला, (चित्र में बाईं ओर) जीवन-धाम में आज अपने बड़े बेटे राहुल के साथ प्रभु से मिली कृपाओं की गवाही देने आई हूँ। मेरा बेटा, जो अब 6 साल का है, बचपन से ही दिल का मरीज़ था, जिसके विषय में मुझे बहुत देर बाद पता चला था। जब मैंने देखा कि इसकी दिल की धड़कन अन्य सभी बच्चों से तेज़ है, तो मैं इसे जीवन अस्पताल ले गई। वहाँ के डॉक्टर ने जाँच करने पर यह बताया कि इसके दिल में एक छेद है और इसे फौरन कोई बड़े अस्पताल में दिखाओ। यह बात सुनकर मेरी आँखें भर आईं और मैं सोचने लगी कि मैं क्या करूँ। मैं इसे AIIMS में ले गई और वहाँ भी चार डॉक्टरों ने यही बात बताई। अन्त में वहाँ के सबसे बड़े दिल के डॉक्टर के पास ले जाकर इसके दिल की पूरी जाँच करवाई। तब मैंने प्रभु येशु से उसके लिए प्रार्थना की और उसके ठीक हो जाने पर जीवन-धाम में जाकर गवाही देने की ठानी। इससे पहले प्रभु येशु की कृपा से ही मुझे दो बच्चे और मिले हैं। चमत्कार यह हुआ कि रिपोर्ट में सिर्फ खून की कमी ही निकली, पर उसके दिल में कोई छेद नहीं निकला। खून चढ़ाने के बाद अब वह बिल्कुल ठीक है और उसके दिल की धड़कन भी सामान्य है। प्रभु येशु ने ही उसके दिल को स्वस्थ किया है। उसे लाखों बार धन्यवाद!

विमला, राहुल, दिल्ली

मैं, कुलवन्ती, (चित्र में दाईं ओर) जीवन-धाम में आज अपनी बेटी के साथ यह गवाही देने आई हूँ कि प्रभु ने मेरी बेटी काजल (उम्र-1 वर्ष) को एक नया जीवन दिया है। 25 दिन पहले इसे तेज़ खांसी शुरू हो गई थी। हमने इसकी दवा करवाई, पर इसे कोई आराम नहीं आया। हालत बिगड़ने पर किसी ने कहा कि इसे AIIMS (मेडिकल) में ले जाओ। वहाँ इसे ले जाकर हमने इसे भर्ती करवा दिया। दस दिन तक इलाज चला और जाँच करके डॉक्टर ने पहले तो हमें यह बताया कि इसके दिल में छेद है। साथ ही यह भी बताया कि वह दिल की मरीज़ है। मैं बहुत ही डर गई। मैंने प्रभु येशु से उसके लिए प्रार्थना की क्योंकि मुझे विश्वास था कि केवल वो ही इसे बचा सकते हैं। कुछ दिनों बाद फिर डॉक्टर ने जाँच की। पर इस बार प्रभु येशु की कृपा से उसके दिल में कोई छेद नहीं निकला। केवल यह बताया कि इसे निमोनिया हो गया है, जो दवा खाने से ठीक हो जायेगा। दुआ के साथ दवा भी लेने से वह अब स्वस्थ हो गई है। इस कृपा के लिए मैं प्रभु की आजीवन आभारी रहूँगी। **कुलवन्ती, काजल,** दिल्ली

शादी के कई वर्षों बाद इन निस्सन्तान दम्पतियों को सन्तान का दान मिला

उसकी पत्नी बाँझ थी। उसके कभी सन्तान नहीं हुई थी। प्रभु का दूत उसे दिखाई दिया और उससे यह बोला, "आप बाँझ हैं। आपके कभी सन्तान नहीं हुई। किन्तु अब आप गर्भवती होंगी और पुत्र प्रसव करेंगी।" (न्यायकर्ताओं 13:2-3)

प्रभु के श्रद्धालु भक्तों! प्रभु का भरोसा करो। वही उनकी सहायता और ढाल है। प्रभु हमको याद करता है। वह हमें आशीर्वाद प्रदान करेगा। (स्तोत्र 115:11:12)

एक अनोखा चमत्कार -प्रभु येशु के अति पवित्र रक्त का!

जीवन-धाम में फरवरी के महीने में वेदी पर रखे प्रभु येशु के पवित्र हृदय की तस्वीर पर प्रभु का अति पवित्र रक्त सुस्पष्ट रूप से छोटी-छोटी बूँदों में गिरा देखा (बाई चित्र में)। इससे पहले इस तस्वीर से प्रकाश की किरणों को निकलते हुए अनेकों ने देखा है। यह प्रभु के पवित्र रक्त के चमत्कारों में एक प्रमुख व अदभुत चमत्कार है।

"जब तुम उपवास करते हो, तो अपने सिर में तेल लगाओ और अपना मुँह धो लो, जिससे लोगों को नहीं, केवल तुम्हारे पिता को, जो अद श्य है, यह पता चले कि तुम उपवास कर रहे हो। तुम्हारा पिता, जो अद श्य को भी देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।"(सन्त मत्ती 6:17-18)

“ईश्वर का वचन जीवन्त, सशक्त और किसी भी दुधारी तलवार से तेज है।” वचन की शक्ति से इन सभी को सालों पुराने असहनीय कमर दर्द से पूर्ण रूप से मुक्ति मिली!

येशु की स्तुति हो ! येशु को धन्यवाद! मैं, ज्योति शर्मा(उम्र-25 वर्ष, ऊपर चित्र में सबसे दायीं ओर), पिछल 15 वर्षों से कमर दर्द से परेशान था क्योंकि मैं नीम के पेड़ से गिर गया था। अपने गाँव में बिहार में कई डॉक्टरों को दिखाया पर आराम न मिला। आखिर में **जीवन-धाम** में किसी के बताने पर मैं आया। प्रभु की कृपा से मुझे धीरे-धीरे आराम मिलता गया और एक महीने के अन्दर ही मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया हूँ। **ज्योति शर्मा, दिल्ली**

मैं, बबलू कुमार(ऊपर चित्र में दायीं ओर से दूसरे स्थान पर), जब करीब 10 वर्ष का था, एक दिन नीम के पेड़ से गिर गया था। मैं पहले बेहोश हो गया था और मेरा मामा मुझे डॉक्टर के पास ले गया। मुझे बाद में होश तो आ गया पर मैं कमर दर्द से परेशान था। कुछ दिनों में आराम तो आ गया था, पर दर्द पूरी तरह गया ही नहीं। आखिर में **जीवन-धाम** में आने पर प्रभु की कृपा से मेरा दर्द गायब हुआ। प्रभु येशु की जय हो! **बबलू कुमार**

जीवन-धाम, फरीदाबाद कैसे पहुँचें
(प्रार्थना का समय : हर इतवार 9:30 से 1:00 बजे तक)

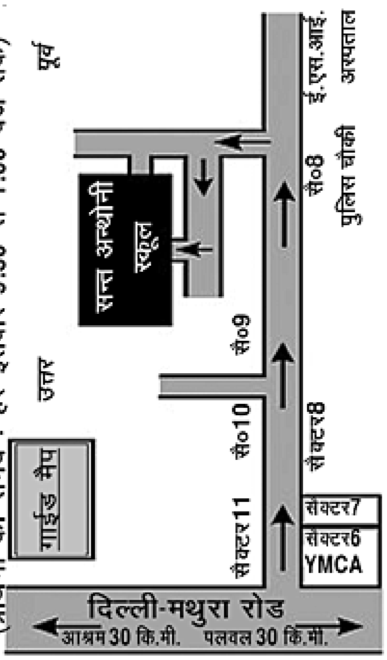

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

8) प्रेरित - चरित
f) अध्याय 16-18

प्रेरित–चरित के ग्रन्थ के अध्याय **16 से 18** तक से लिये गये प्रस्तुत वाक्यों में रिक्त स्थान भरें, उनकी वाक्यांश संख्या अध्याय सहित बतायें तथा उत्तर में यह भी लिखें कि ये वाक्य **सर्वप्रथम** किसने कहे?

1) ________ ने_____ भेजा कि_____ लोगों को_____ दिया जाये।

2) क्या___ यह_____सकते हैं कि ____ कौन-सी नयी_____ देते हैं।

3) _____लोगों ने_____कि मैं सचमुच____में _____ करती हूँ तो_____,मेरे यहाँ_______।

4) परन्तु यह_____ शिक्षा, _____ और तुम्हारी _____ से_____ रखता है।

5) ये____हैं और ऐसी____का____करते हैं, जिन्हें_______ या जिन पर_____ हम_____ के लिए उचित नहीं है।

6) उसने एक ही_______से_______के सब _____की___की और____सारी_____पर बसाया।

7) ____समुद्र _____ कर________आइए और_____ सहायता कीजिए।

8) _____मत, बल्कि ______जाओ और____ मत_____ ।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

8) प्रेरित - चरित
e) अध्याय 13-15

1) आइये, नगरों, वचन, भाईयों।(15:36) पौलुस ने
2) मन, अनुकूल, येस्से, दाऊद।(13:22) ईश्वर ने
3) ईश्वर, हृदय, हमारे, आत्मा।(15:8) पेत्रुस ने
4) बरनाबस, साऊल, कार्य।(13:2) पवित्र आत्मा ने कहा
5) भाईयों, हम, आप, सुख, भोगने।(14:15) बरनाबस और पौलुस ने कहा
6) शैतान, बच्चा, कपट, शत्रु। (13:10) साऊल(पौलुस) ने कहा
7) मेरा, गैर-यहूदी, अभिमुख, अनावश्यक।(15:19) याकूब ने कहा
8) देवता, रूप, हमारे, उतरे।(14:11) लोगों ने कहा

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सही उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दु:खी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?
आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है ‘जीवन-धाम’। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रात: 9:30 बजे से 1:00 बजे तक ‘जीवन-धाम’ फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

“सावधान रहो। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने धर्म-कार्यों का प्रदर्शन न करो, नहीं तो तुम अपने स्वर्गिक पिता के पुरस्कार से वंचित रह जाओगे।”(सन्त मत्ती 6:1)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.